e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 5, May 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.423

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

सिद्धों की प्राचीन लोकभाषा व साहित्य

DR. YASHWANT SHAURYA

ASSISTANT PROFESSOR, HEAD OF DEPT. OF HISTORY, MAULANA AZAD UNIVERSITY, BUJHAWAR, JODHPUR, RAJASTHAN, INDIA

सार

सिद्ध साहित्य ब्रजयानी सिद्धों के द्वारा रचा गया साहित्य है। इनका संबंध बौद्ध धर्म से है। ये भारत के पूर्वी भाग में सक्रिय थे। इनके ग्रंथों की संख्या 84 मानी जाती है सिद्ध साहित्य का प्रारंभ आठवीं सदी से लेकर तेरे सदी मन जाती है जिनमें सरहप्पा, शबरप्पा, लुइप्पा, डोम्भिप्पा, कुक्कुरिप्पा (कणहपा) आदि मुख्य हैं। इन्होंने अपभ्रंश मिश्रित पुरानी हिंदी तथा अपभ्रंश में रचनाएं की हैं। सरहप्पा प्रथम सिद्ध कवि थे। राहुल सांकृत्यायन ने इन्हें हिन्दी का प्रथम कवि माना है। साधना अवस्था से निकली सिद्धों की वाणी 'चरिया गीत / चर्यागीत' कहलाती है। बौद्ध धर्म की दो शाखाएंहीनयान,महायान सिद्ध साहित्य महायान शाखा से संबंधित साहित्य था सिद्ध साहित्य में जातिवाद और वाह्याचारों पर प्रहार किया गया है। इसमें देहवाद का महिमा मण्डन और सहज साधना पर बल दिया गया है। इसमें महासुखवाद द्वारा ईश्वरत्व की प्राप्ति पर बल दिया गया है। सिद्ध साहित्य के रचयिताओं में लुईपा सर्वश्रेष्ठ हैं। सिद्ध साहित्य के प्रमुख कवि सरहपा दोहा कोष 769 ई. शबरपा चदपिद 780 ई. कण्हपा 74 ग्रंथ 820 ई. डोम्मिप् डोम्बि, गीतिक, योगचर्चा, अक्षरादकोष कुक्कुरिपा 16 ग्रंथ 840 ई.

परिचय

सिद्धों का चरम उत्कर्ष काल आठवीं से दसवीं शताब्दियों के मध्य था। इनके प्रमुख केन्द्र श्रीपर्वत, अर्बुदपर्वत, तक्षशिला, नालन्दा, असम, और बिहार थे। सिद्धों को पालवंश का संरक्षण प्राप्त था। बाद में मुसलमान अक्रमाणकारियों से त्रस्त और दुखी होकर सिद्ध 'भोर' देश अथार्त नेपाल, भूटान, तिब्बत की ओर चले गए।[1,2]

सिद्धों के विषय में सबसे पहली जानकारी ज्योतिरीश्वर ठाकुर की रचना 'वर्णरत्नाकर' से मिलती है। सिद्धों की रचनाओं की खोज पहले हरप्रसाद शास्त्री ने नेपाल से किया था। १९१७ ई० में इनकी वाणियों का संकलन 'बौद्ध गान और दोहा' के नाम से बांग्ला भाषा में किया गया। इसके बाद सिद्धों के विषय में विस्तृत और विवेचनात्मक जानकारी सबसे पहले राहुल सांकृत्यायन ने 'हिन्दी काव्यधारा' में दी जो १०४५ में प्रकाशित हुई थी। राहुल ने सिद्ध साहित्य का आरम्भ सरहपा से माना है और इनका (सरहपा का) समय ७६९ ई० के लगभग माना है। उन्होने सिद्धों की संख्या चौरासी माना है जिनमें ८० पुरुष और ४ स्त्रियाँ (कनखलापा, लक्ष्मीकरा, मणिभद्रा, मेखलापा) थीं। मत्स्येंद्रनाथ (मच्छंदरनाथ), जालान्धरनाथ, नागार्जुन, चर्पटनाथ और गोरखनाथ - वे सिद्ध कवि हैं जो नाथ साहित्य में भी आते हैं।

प्रसार क्षेत्र

सिद्ध सा हित्य बिहार से लेकर असम तक फैला था। राहुल संकृत्यायन ने 84 सिद्धों के नामों का उल्लेख किया है जिनमें सिद्ध 'सरहपा' से यह साहित्य आरम्भ होता है। बिहार के नालन्दा विद्यापीठ इनके मुख्य अड्डे माने जाते हैं। बख्तियार खिलजी ने आक्रमण कर इन्हें भारी नुकसान पहुचाया बाद में यह 'भोट' देश चले गए। इनकी रचनाओं का एक संग्रह महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने बांग्ला भाषा में 'बौद्धगान-ओ-दोहा' के नाम से निकाला।

सिद्ध साहित्य की विशेषताएं -

- सिद्ध कवि व्यवहारिक पक्ष पर बल देते थे
- सिद्ध कवियों ने मंत्र जादू टोना चमत्कार शब्दों द्वारा तांत्रिक साधना पद्दी अपनाएं
- उन्होंने ब्राह्मण धर्म का विरोध किया
- सिद्ध कवि योग साधना पर विशेष बल देते थे

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

- सिद्ध कवि मोक्ष पाने की अपेक्षा सिद्धियों पर जोर देते थे
- सिद्ध कवियों ने जाति पांति एवं वर्ण भेद का उठकर मुकाबला किया
- सिद्धू ने रहस्यवादी प्रवृत्ति को अपनाकर संध्या भाषा के माध्यम से यह प्रवचन देते थे अपभ्रंश प्लस अर्धमगधी

- सिद्ध साहित्य की काव्य में कबीर सूरदास विद्यापति ने काव्य को प्रभावित किया
- बिहार पश्चिम बंगाल श्री पर्वत आदि प्रसिद्ध कवि छोटी जातियों एवं आरक्षित में से थे

वर्गीकरण

सिद्ध साहित्य को मुख्यतः निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है:-

- (१) नीति या आचार संबंधित साहित्य[3,4]
- (२) उपदेश परक साहित्य
- (३) साधना सम्बन्धी या रहस्यवादी साहित्य

भाषा-शैली

सिद्धों की भाषा में 'उलटबासी' शैली का पूर्व रुप देखने को मिलता है। इनकी भाषा को संध्या भाषा कहा गया है।

सिद्ध साहित्य की प्रमुख विशेषताएं

- इस साहित्य में तंत्र साधना पर अधिक बल दिया गया।
- साधना पद्धति में शिव-शक्ति के युगल रूप की उपासना की जाती है।
- इसमें जाति प्रथा एवं वर्णभेद व्यवस्था का विरोध किया गया।
- इस साहित्य में ब्राह्मण धर्म का खंडन किया गया है।
- सिद्धों में पंच मकार (मांस, मछली, मदिरा, मुद्रा, मैथुन) की दुष्प्रवृति देखने को मिलती है। हालांकि तंत्रशास्त्र में इसका अर्थ भिन्न बताया गया है।

प्रमुख सिद्ध कवि व उनकी रचनाएँ

- सरहपा (769 ई.) - दोहाकोष
- लुइपा (773 ई. लगभग) -- लुइपादगीतिका
- शबरपा (780 ई.) -- चर्यापद , महामुद्रावज्रगीति , वज्रयोगिनीसाधना
- कण्हपा (820 ई. लगभग) -- चर्याचर्यविनिश्चय, कण्हपादगीतिका
- डोंभिपा (840 ई. लगभग) -- डोंबिगीतिका, योगचर्या, अक्षरद्विकोपदेश
- भूसुकपा-- बोधिचर्यावतार
- आर्यदेवपा -- कावेरीगीतिका
- कंवणपा -- चर्यागीतिका
- कंबलपा -- असंबंध-सर्ग दृष्टि[5,6]

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

- गुंडरीपा -- चर्यागीति
- जयनन्दीपा -- तर्क मुदँगर कारिका
- जालंधरपा -- वियुक्त मंजरी गीति, हुँकार चित्त , भावना क्रम
- दारिकपा -- महागुह्य तत्त्वोपदेश
- धामपा -- सुगत दृष्टिगीतिकाचर्या

आलोचना

सिद्ध साहित्य को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सांप्रदायिक शिक्षा मात्र कहा जिनका बाद में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने खण्डन किया। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सिद्ध साहित्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि, "जो जनता तात्कालिक नरेशों की स्वेच्छाचारिता, पराजय त्रस्त होकर निराशा के गर्त में गिरी हुई थी, उनके लिए इन सिद्धों की वाणी ने संजीवनी का कार्य किया।

विचार-विमर्श

सिद्ध साहित्य के इतिहास में चौरासी सिद्धों का उल्लेख मिलता है। सिद्धों ने बौद्ध धर्म के वज्रयान तत्व का प्रचार करने के लिये, जो साहित्य जनभाषा मे लिखा, वह हिन्दी के सिद्ध साहित्य की सीमा मे आता है

सिद्ध सरहपा (सरहपाद, सरोजवज्र, राहुल भ्रद्र) से सिद्ध सम्प्रदाय की शुरुआत मानी जाती है। यह पहले सिद्ध योगी थे। जाति से यह ब्राह्मण थे। राहुल सांकृत्यायन ने इनका जन्मकाल 769 ई. का माना, जिससे सभी विद्वान सहमत हैं। इनके द्वारा रचित बत्तीस ग्रंथ बताए जाते हैं जिनमे से 'दोहाकोश' हिन्दी की रचनाओं मे प्रसिद्ध है। इन्होने पाखण्ड और आडम्बर का विरोध किया तथा गुरू सेवा को महत्व दिया।[7,8]

इनके बाद इनकी परम्परा को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख सिद्ध हुए हैं क्रमश: इस प्रकार हैं :-

शबरपा : इनका जन्म 780 ई. में हुआ। यह क्षत्रिय थे। सरहपा से इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया। 'चर्यापद' इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है। इनकी कविता का उदाहरण देखिये-

हेरि ये मेरि तइला बाड़ी खसमे समतुला
षुकड़ये सेरे कपासु फ़ुटिला।
तइला वाड़िर पासेर जोहणा वाड़ि ताएला
फ़िटेली अंधारि रे आकासु फ़ुलिआ॥

लुइपा : ये राजा धर्मपाल के राज्यकाल में कायस्थ परिवार में जन्मे थे। शबरपा ने इन्हें अपना शिष्य माना था। चौरासी सिद्धों में इनका सबसे ऊँचा स्थान माना जाता है। उड़ीसा के तत्कालीन राजा और मंत्री इनके शिष्य हो गए थे।

डोम्भिया : मगध के क्षत्रिय वंश में जन्मे डोम्भिया ने विरूपा से दीक्षा ग्रहण की थी। इनका जन्मकाल 840 ई. रहा। इनके द्वारा इक्कीस ग्रंथों की रचना की गई, जिनमें 'डोम्बि-गीतिका', 'योगाचर्या' और 'अक्षरद्विकोपदेश' प्रमुख हैं।

कण्हपा : इनका जन्म ब्राह्मण वंश में 820 ई. में हुआ था। यह कर्नाटक के थे, लेकिन बिहार के सोमपुरी स्थान पर रहते थे। जालंधरपा को इन्होंने अपना गुरु बनाया था। इनके लिखे चौहत्तर ग्रंथ बताए जाते हैं। यह पौराणिक रूढ़ियों और उनमें फैले भ्रमों के खिलाफ थे।

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

कुक्कुरिपा : कपिलवस्तु के ब्राह्मण कुल में इनका जन्म हुआ। चर्पटीया इनके गुरु थे। इनके द्वारा रचित 16 ग्रंथ माने गए हैं।

परिणाम

सिद्ध साहित्य के अंतर्गत 84 सिद्धों के समय प्रचलित लोक भाषा हिंदी में जो साहित्य ग्रंथ लिखे गए हैं उनको शामिल किया गया है। सिद्ध बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा से सम्बंधित हैं। सिद्धों ने बौद्ध-धर्म के वज्रयान तत्व का प्रचार करने के लिए जन भाषा में जो साहित्य लिखा वह हिन्दी के सिद्ध साहित्य के अन्तर्गत आता है। दी के प्रमुख सिद्ध कवि हैं- सरहपा, शबरपा, लुइपा, डोम्भिपा, काण्हपा, कुक्कुरिपा, तंतिपा आदि । सिद्ध साहित्य को सर्वप्रथम प्रकाश में लाने का कार्य सन् 1916 ई. में 'हर प्रसाद शास्त्री' ने 'बौद्धगान ओ दोहा' शीर्षक से कविताएँ प्रकाशित करके किया । दूसरा प्रयास प्रबोध चंद्र बागची ने तिब्बती पाठों के आधार पर शास्त्री जी के पाठ में संशोधन, पाठोद्वार और टीका लिखकर किया । तीसरा प्रयास राहुल सांकृत्यायन ने सन् 1945 ई. में नेपाली प्रतियों के आधार पर 'हिंदी काव्यधारा' और तिब्बती पाठों के आधार पर सरहपा के दोहों का संग्रह तैयार कर किया । वहीं समग्र रूप से सर्वप्रथम सिद्ध साहित्य का सम्पादन प्राच्यविद् बेंडल ने किया । प्रमुख सिद्ध कवि और उनकी रचनाएँ - क्रम कवि समय रचनाएँ ग्रन्थों की संख्या 1. सरहपा 769 ई. 1. दोहाकोष 2. चर्यागीत कोष 32 ग्रंथ 2. शबरपा 780 ई. 1. चर्यापद 2. चित्तगुहागम्भीरार्य 3. महामुद्रावज्रगीति 4. शुन्यतादृष्टि - 3. लुईपा 1. अभिसमयविभंग 2. तत्त्वस्वाभाव दोहाकोश 3. बुद्धोदय 4. भगवद् भिसमय 5. लुईपाद गीतिका - 4. डोम्भिपा 840 ई. 1. डोम्बिगीतिका 2. योगचर्या 3. अक्षरादि 4. कोपदेश 31 ग्रंथ 5. कण्हपा 820 ई. 1. कण्हपाद गीतिका 2. दोहा कोश 3. योगरत्नमाला 74 ग्रंथ 6. कुक्कुरिपा 1.तत्वसुखभावनासारि योगभवनोपदेश 2. स्रवपरिच्छेदन 16 ग्रंथ सिद्ध साहित्य संबंधी प्रमुख तथ्य- 1. सामान्य रूप से हिंदी साहित्य का आरंभ सिद्धों की रचनाओं से माना जाता है । 2. भरतमुनि ने लोकभाषा को 'अपभ्रंश' नाम न देकर 'देशभाषा' कहा है । 3. रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल के अंतर्गत् 'देशभाषा' शब्द 'बोलचाल की भाषा' के लिए किया है । 4. सिद्धों का विकास बौद्ध धर्म के ब्रजयान शाखा से हुआ । 5. वज्रयान में 'युगनद्ध' की भावना पाई जाती है । 6. सिद्ध साहित्य का प्रमुख केंद्र 'श्री पर्वत' था । 7. गेय पदों की परम्परा सिद्धों से प्रारंभ होती है । 8. 'सिद्व-सिद्वांत-पद्वति' ग्रंथ 'हठयोग' से संबंधित है । 9. 'बौद्ध गान औ दूहा' सिद्धों की रचनाओं का संग्रह है जिसे हरप्रसाद शास्त्री ने बंगाक्षरों में प्रकाशित कराया था । 10. 'चर्यापद' सिद्धों की व्यवहार संबंधी रचनाएँ हैं । इसे भी पढ़ें- आदिकालीन नाथसाहित्य के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ आदिकालीन जैनसाहित्य के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ आदिकालीन रासोसाहित्य के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ आदिकालीन अपभ्रंस साहित्य के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ सरहपा (सरहपाद)- 1. सरहपा का अन्य नाम 'सरोजवज्र' (वज्रयान से संबंध) और 'राहुलभद्र' (बौद्ध परम्परा से संबंध) भी है । 2. सर्वमत से विद्वानों ने हिंदी का प्रथम कवि माना है । 3. सरहपा 84 सिद्धों में प्रथम सिद्ध थे । 4. राहुल सांकृत्यायन के अनुसार सरहपा का समय 769 ई. है । 5. राहुल सांकृत्यायन ने 'हिंदी काव्यधारा' में सरहपा की कुछ रचनाओं का संग्रह किया है । 6. इन्होने 'सहजयान' या 'सहजिया' सम्प्रदाय की स्थापना किया था । 7. सहजयान के प्रवर्तक माने जाते हैं । लुइपा- 1. चौरासी सिद्धों में सबसे ऊँचा स्थान 2. रचनाओं में रहस्य भावना की प्रधानता सिद्ध साहित्य के प्रमुख कवियों के गुरु- क्रम कवि गुरु 1. शबरपा सरहपा 2. लुईपा शबरपा 3. डोम्भिपा विरूपा 4. कण्हपा जालांधररपा 5. कुक्कुरिपा चर्पटीया सिद्ध साहित्य में वर्णित पंचमकार की प्रतीकात्मक व्याख्या- पंचमकार के अंतर्गत् नारी के मुद्रा रूप की कल्पना मिलती है । इसके अतिरिक्त युगनद्वता की व्याख्या भी मिल जाती है, जिसमें करुणा और शून्यता के संयोग की कल्पना की गई है । क्रम पंचमकार प्रतीकात्मक व्याख्या 1. मद्य सहस्रदल में क्षरित होने वाली सुधा 2. मत्स्य इड़ा-पिंगला (गंगा-जमुना) में प्रवाहित श्वास 3. मांस ज्ञान से पाप हनन की प्रक्रिया 4. मुद्रा असत्य का परित्याग 5. मैथुन सहस्रार में स्थित शिव तथा कुंडलिनी का योग[9,10]

गोदान की मूल समस्या गोदान में प्रस्तुत विभिन्न समस्याओं का उल्लेख करते हुए बताइए कि उसकी प्रमुख समस्या क्या है ? गोदान की मूल समस्या शहरी उत्तर – गोदान प्रेमचंद की सर्वाधिक लोकप्रिय व कालजयी उपन्यास है इस उपन्यास को कृषकों का महाकाव्य भी कहा गया है। सभी आलोचकों ने प्रेमचंद को कृषक और सामाजिक जीवन का कथाकार कहा है। उसके सभी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन तथा ग्रामवासियों विशेषतः किसानों शोषित वर्गों की समस्याओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया गया है उनकी समस्या का मूल कारण ढूंढने का प्रयत्न किया है।इस कारण प्रेमचंद को ग्रामीण जीवन तथा कृषि – संस्कृति का कथाकार कहा गया है। डॉक्टर महेंद्र भटनागर के अनुसार – ' प्रेमचंद के सभी उपन्यास सामाजिक है , और उनकी सामाजिकता किसी न किसी समस्या पर ही आधारित है , प्रेमचंद का कोई भी उपन्यास ऐसा नहीं है जिसमें किसी समस्या को न उठाया गया हो। वस्तुतः वह समस्यामूलक उपन्यासकार ही थे।' आचार्य शुक्ल के अनुसार – ' प्रेमचंद कहानी और उपन्यास में वही कार्य कर रहे थे जो कविता के क्षेत्र में छायावादी लेखक। डॉक्टर नगेंद्र के अनुसार – ' प्रेमचंद के कथा का मूल स्वर लोकमंगल था उनकी कहानी अथवा उपन्यास में किसी न किसी समस्या को उजागर किया गया था और उससे बचने का एक मार्ग भी सुझाया गया था। ' गोदान को भी ग्राम जीवन तथा कृषि जीवन / संस्कृति का महाकाव्य माना गया है। भारतीय किसान के संघर्ष की सम्पूर्ण गाथा तथा उसकी त्रासदी की कहानी इस उपन्यास में निहित है। अतः उसमें ग्रामीण जीवन से संबंध अनेक समस्याएं हैं गोदान की आधिकारिक कथा

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

होरी और उसके परिवार से संबंध होने के कारण यह ग्राम जीवन और कृषक समाज से स्वतः जुड़ी है और उसकी प्रासंगिक कथा का संबंध नगर में रहने वाले पात्रों – ' राय साहब ' , ' मालती ' , ' मेहता ' , ' खन्ना ' आदि समस्याओं से है। अतः गोदान में चित्रित समस्याओं पर हम तीन दृष्टियों या प्रकार से विचार कर सकते हैं – पहला स्थान की दृष्टि (शहर और ग्राम) से दूसरा विषय (मूल स्वर)की दृष्टि से तथा तीसरा समस्या के लिए उत्तरदाई व्यक्तियों या संस्थाओं की दृष्टि से। ग्राम तथा नगर की कुछ समस्याएं विषय की दृष्टि से समान है – जैसे ऋण की समस्या , शोषण की समस्या , प्रेम और विवाह की समस्या आदि। अतः हम पहले और दूसरी दृष्टि मिलाकर गोदान में प्रस्तुत समस्याओं पर विचार कर रहे हैं। विषय की दृष्टि से गोदान में चित्रित समस्याओं को तीन वर्गों में रखा जा सकता है सामाजिक , धर्म , परंपरागत विश्वासों , जीवन मूल्यों , रूढ़ियों , अंधविश्वासों के कारण उत्पन्न समस्याएं तथा आर्थिक समस्याएं। नारी की समस्या – गोदान में नारी की समस्या एक मुख्य समस्या है गांव में लोग परंपरा प्रेमी है तथा प्राचीन जीवन मूल्यों विश्वासों रूढ़ियों से चिपके हुए हैं। अतः नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण वही है जो पुरुष प्रधान समाज का रहा है। चाहे नारी शहर की हो या ग्रामीण क्षेत्र की नारी की स्थिति दोनों जगह एक ही प्रकार की है जहाँ ग्रामीण में -झुनिया , सिलिया ,सोना ,रूपा आदि का वर्णन है वही शहर में – मालती , आदि नारी पात्र की स्थिति है। लोग नारी को अपना गुलाम समझते हैं उससे उस गाय की तरह मानते हैं। जिसे किसी भी खूंटे से उसकी इच्छा के विरुद्ध भी बांधा जा सकता है। मेहता मालती से कहता है ' प्रेम खुखार शेर की भाटी होता है जो अपने शिकार पर किसी की दृष्टि नहीं पड़ने देता है। ' गाँव में होरी , धनिया जैसा उग्र स्वभाव का निर्भय स्त्री पात्र को भी दबा कर रखना चाहता है। [11,12]भोला अधेड़ होकर भी नवयुवती से विवाह करके उसको दासी की तरह रखना चाहता है। बड़ी जाति का मातादीन चमार जाति की स्त्री सिलिया से यौन संबंध होते हुए भी उसे पत्नी नहीं बनाना चाहता। केवल रखेल के रूप में रखना चाहता है। सोना का पति मथुरा विवाहित और घर में सुंदर पत्नी होते हुए भी सिलिया पर डोरे डालता है। शहर / नगर में खन्ना पत्नी होते हुए भी मालती के चक्कर में फंसा हुआ है। गोविंदी के साथ उसका व्यवहार उपेक्षा , उदासीनता तथा क्रूरता का है। मीनाक्षी का पति शराबी वेश्यागामी तथा विलासी है। अतः वह भी मीनाक्षी के साथ पति का धर्म नहीं निभाता। इस प्रकार प्रेमचंद ने नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण कर के नारी संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डाला है। प्रेमचंद की विशेषता यह है कि उन्होंने धनिया , मीनाक्षी जैसे उग्र स्वभाव वाली स्त्रियों का चित्रण करके तथा ' विमेंस लीग ' जैसी संस्था की स्थापना करके वहां होने वाले कार्यक्रमों का परिचय देकर यह स्पष्ट संकेत दिया है कि नारी जाति में अपने अधिकारों के प्रति बोध जागृत रहा है। वह पुरुष के अत्याचारों को मौन रहकर चुपचाप सहन करने के बजाए विद्रोह करने लगी है। स्वच्छंद प्रेम – प्रेम की समस्या आज ही नहीं पूर्व काल से ही चलती आरही है। कालिदास , तुलसी , सुर , पद्माकर , आदि कविओं की कविता साहित्य को ध्यान से पढ़ने पर स्पस्ट होता है। आज भी अधिकांश विवाह माता – पिता के द्वारा तय किए जाते हैं। पौराणिक कथा में भी यही रीती थी। कभी कभी कन्या गंधर्व विवाह भी किया करती थी। यह नौबत माता – पिता के राजी न होने के कारण ही हुआ करता था। स्वतंत्र प्रेम को अच्छा नहीं माना जाता परंतु युवक – युवती के बीच परस्पर आकर्षण सहज स्वाभाविक है। दोनों चाहते हैं कि उनका प्रथम प्रेम आकर्षण विवाह में परिणत हो। गोदान में भी स्वच्छंद प्रेम की परिणति को उजागर किया है। प्रेमचंद भी इस समस्या को अनुभव कर चुके थे। गोदान में दो प्रकार से स्वछंद प्रेम को दिखाया गया है। स्वच्छंद प्रेम की परिणति विवाह में झुनिया विधवा है दूसरी जाति की है , पर गोबर प्रथम दृष्टि में ही उस से प्रेम करने लगता है। दोनों के बीच यौन संबंध भी है हो जाता है। गोबर गांव वालों की पंचायत और माता – पिता सब से डरता है। उसे आशंका है कि उसकी विवाह को कोई स्वीकार नहीं करेगा , फिर भी वह साहसपूर्वक झुनिया को घर ले आता है। धनिया (जो गोबर की माँ है) [13,14]की उदारता के कारण दोनों का विवाह हो जाता है। परंतु गांव के लोगों को यह सहन नहीं होता और पंचायत करके उस विवाह को नकार दिया जाता है और होरी को दंडस्वरूप अपने घर में रखा सारा अनाज और नगद30 देने पड़ते हैं। इन सभी के लिए होरी को अपना घर तक गिरवी रखना पड़ता है। जिसका विरोध गोरी करता है और शहर की और प्रस्थान कर जाता है। गांव में स्वच्छंद प्रेम का दूसरा उदाहरण मातादीन – सीलिया प्रसंग है। मातादीन जात का ब्राह्मण है सिलिया चमारिन है दोनों के बीच परस्पर आकर्षण होता है दोनों एक दूसरे के परम् में पद जाते है और यौन संबंध स्थापित हो जाता है। किन्तु दोनों को जाती का भय बराबर है मातादीन उतना साहसी नहीं है जितना कि गोबर। अतः मातादीन , सीलिया से विवाह करने को तैयार नहीं होता। गांव के नवयुवकों द्वारा विवश किए जाने पर उसके मुंह में हड्डी डालकर उसे चमार बनाने के दुस्साहस के बाद ही वह सिलिया को पत्नी के रुप में अपना आता है। इस प्रसंग द्वारा लेखक गांव में अभिजात्य वर्ग कहे जाने वाले लोगों से पंचों की भेदभाव पूर्ण नीति तथा आचरण पर भी कटाक्ष करते हैं। जहां गोबर तथा होरी गरीब होने के कारण झुनिया को घर पर बहु बनाने के लिए तड़पाते हैं। वही मातादीन और उसके पिता दातादीन से कोई कुछ नहीं कहता उसके सौ खून भी माफ कर दिए जाते हैं। विवाह संबंधी – विवाह की समस्याएं गोदान की एक मुख्य समस्या है जिसका चित्रण गोदान में हुआ है। दहेज के कारण विवाह होने में बाधा , बाल विवाह तथा विधवा की समस्या अनमेल विवाह या वृद्ध विवाह का उदहारण इस उपन्यास में देखा जा सकता है। होरी की बेटी सोना के विवाह में दहेज की समस्या के कारण बढ़ा बनता है। परंतु मथुरा का सोना के प्रति प्रबल आकर्षण सोना का साहस और स्पष्ट ऐलान की दहेज की मांग पर अड़े रहने के कारण वह विवाह नहीं करेगी। इस बाधा को समाप्त कर देता है छोटी बेटी रूपा का विवाह भी दहेज न दे सकने के कारण अधेड़ उम्र के रामसेवक से करना पड़ता है , जो रूपा के पिता की उम्र का है।झुनिया बाल विधवा है अतः उसे सारी उम्र अकेले अपनी इच्छाओं का दमन करते हुए यही काटनी है। गोबर द्वारा अपनाए जाने पर भी भी पंचायत और गांव के लोग विरोध करते हैं स्पष्ट है कि विधवा को समाज की रुचियों तथा अनीति के कारण अपना जीवन शारीरिक तथा मानसिक कष्टों के बीच बिताना पड़ता है। यह भी पढ़ें – ध्रुवस्वामिनी नाटक का रचना शिल्प

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

परिवारिक विघटन की समस्या – परिवार के विघटन की समस्या आदि काल से चली आ रही है यही समस्या को गोदान में प्रेमचंद जी ने उठाया है। जीवन मूल्यों में परिवर्तन तथा आर्थिक दबाव के कारण सम्मिलित परिवार टूटने लगे थे। प्रेमचंद ने स्वयं अपने परिवार मैं सास बहू के झगड़े थे। उनकी सौतेली मां कि कभी उनकी पत्नी से नहीं बनी थी माता के पुत्रों अपने सौतेले भाइयों के लिए सब कुछ करने के बाद भी उन्हें बदले में मिले केवल उपेक्षा अनादर ही मिला। उपन्या में पहले उन्होंने होरी तथा उनके दो भाइयों हीरा तथा शोभा को उनसे अलग अलग होते दिखाया है। तथा उसके बाद में पिता-पुत्र होरी तथा गोबर के बीच विचार विमर्श से के कारण जो दरार पड़ती है। वह बढ़ती जाती है और गोबर अपनी पत्नी झुनिया के साथ गांव छोड़कर शहर चला जाता है ,वहां मजदूरी करता है और अपनी बहन की शादी के अवसर पर भी गांव नहीं लौटता। नगर में राय साहब तथा उनके बेटे रूद्र पाल में मतभेद है। सरोज को लेकर बाप-बेटे के संबंधों में दरार पड़ गई है। बेटी मीनाक्षी पिता के लाख समझाने पर भी अपने वेश्यागामी माय शराबी पति से समझौता करने को तैयार नहीं होती। उधर खन्ना तथा उसकी पत्नी गोविंदी के साथ भी संबंकुच ाचा नहीं है। इन चित्रों के द्वारा लेखक ने सम्मिलित परिवारों के टूटने बिखरने तथा दांपत्य जीवन में कटुता आने की समस्या की ओर संकेत किया है। दिखावा / प्रदर्शनीयता की समस्या- प्रदर्शन प्रियता की समस्या या थोथी मर्यादा की समस्या गांव में ही नहीं शहर में भी यही समस्या है। गांव में होरी अपनी प्रतिष्ठा के लिए ही द्वार पर गाय पालना चाहता है। लोग ुको महतो कहेंगे यही चाह में गाय खरीदता है जिसके लिए वह कितने यत्न करता है। भाई जहर देकर गाय को मर देता है। महत्व कहलाने के लालच में गोबर के लाख समझाने पर भी खेती छोड़कर मजदूरी करने को तैयार नहीं होता। धनिया , मथुरा के घरवालों के मना करने पर भी दहेज में अपने सामर्थ्य के बाहर सम्मान देती है और परिवार कर्ज में डूब जाता है।पंच गोबर – झुनिया के विवाह में जो दंड देता है उससे होरी और टूट जाता है। जाति से बहिष्कृत ना हो इसलिए होरी डाँड़ भरता है , जिसके कारण वह कर्ज में डूब जाता है और अंत में उसके पास ना गाय होती है ना बैल और ना खेती करने के लिए खेत। शहर में भी यही हाल है राय साहब अपनी मिथ्या शाख बनाए रखने के लिए कभी इलेक्शन लड़ते हैं तथा कभी पुत्रियों के विवाह के लिए ऋण लेते हैं , और दिन प्रतिदिन कर्ज में डूब कर अपना सुख चैन मानसिक शांति गवा बैठते है। अंधविश्वास – रूढ़ि पालन परंपरागत आस्था विश्वास के कारण उत्पन्न समस्याएं गांव के लोग परंपरा प्रिय रूढ़िवादियों में जकड़े धर्म के रूप तथा लकीर के फकीर होते हैं। [15] नगर के लोग विशेषतः धनवान तथा अभिजात्य वर्ग के लोग इन रूढ़ियों से मुक्त होते हैं। अतः गोदान में प्रेमचंद ने इन समस्याओं का अंकन गांव के संदर्भ में ही किया है। अपने इन अंधविश्वासों परंपरागत जीवनमूल्यों रूढ़ियों के कारण ही गोरी अनेक कष्ट उठाता है। यदि वह इन से मुक्त होता है तो पंच का कहना मान कर इनके पचड़े में ना पढ़ता तो कदाचित उसका जीवन इतना यातनापूर्ण ना होता गांव की हत्या होने पर प्रायश्चित करना चाहिए जाति से बहिष्कृत ना होने के लिए शांति के बाहर ऋण लेकर भी पंचों को प्रसन्न रखना चाहिए। घर की इज्जत बचाने के लिए घर की तलाशी नहीं होनी चाहिए थी। भले ही रिश्वत देनी पड़े यह जानते हुए भी कि ऋण लेता है। दातादीन धूर्त है बेईमान है ब्याज के लिए मूल का तिगुना वसूल कर चुका है रसीद नहीं देता और वसूल हुई धनराशि को दुबारा मांग रहा है , और दातादीन नोखेराम की पाई-पाई चुकाने पर बल देता है क्योंकि वह धर्मगुरु है। उसका विश्वास है कि ब्राह्मण की एक एक पाई चुकानी होनी चाहिए वरना शरीर के मैं कोढ फूट पड़ता है। अपनी मान्यताओं के कारण ही वह गांव में पैसा ना रहते हुए भी सत्यनारायण की कथा की थाली में पैसे डालता है। तीर्थ यात्रा से लौटने पर गांव वालों को प्रसाद बांटता है धनिया पत्नी की मृत्यु के समय गोदान के बदले दिन रात सुतली बांटकर कमाए हुए 20 दातादीन को दान में देती है ईश्वरीय न्याय में विश्वास ईश्वर जो करता है ठीक करता है ईश्वर जी बड़े छोटे अमीर गरीब बनाकर भेजता है। पिछले जन्मों के कर्मों का फल इस जीवन में भोक्ता है। भाग्य के लिखे को कोई नहीं मिटा सकता यह अंधविश्वास ही हो रही को यातना की भट्टी में झोंक देते हैं और उसे यमराज के हाथों में धकेल देते हैं। इस प्रकार होरी के कष्टों का एक कारण उसकी धर्म भीरुता रूढ़िवादिता तथा ज्योतिष होती मर्यादा बनाए रखने की अपराधिता भी है। यह भी पढ़ें – भारत दुर्दशा का रचना शिल्प ध्रुवस्वामिनी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना। आर्थिक समस्याएं – शोषण तथा ऋण की समस्या , गोदान 1936 में प्रकाशित हुआ था प्रेमचंद जीवन भर संघर्ष करते रहे थे और जैनेंद्र को लिखे पत्र से स्पष्ट होता है कि वह आर्थिक कठिनाइयों से जूते – जूते तथा एड़ी चोटी का पसीना बहाकर भी उन कठिनाइयों पर विजय पाने में असमर्थ रहे थे। गांधी के असहयोग आंदोलन में आह्वान पर सरकारी नौकरी को छोड़ चुके थे। घर – परिवार चलाना भी काफी मुश्किल हो गई थी। वह शरीर और मन दोनों से हार गए थे इस समय वह मार्क्सवादी विचारधारा से परिचित हुए और उन्हें मार्क्स के सिद्धांतों में पर्याप्त सच्चाई दिखी मार्ग मानता है कि समाज में केवल दो वर्ग है पहला साधन संपन्न तथा दूसरा साधनहीन बुर्जुआ तथा सर्वहारा। शोषक और शोषित साधन-संपन्न साधनहीन वर्ग की व्यवस्था तथा और सहायता का लाभ उठाकर उसका शोषण करता है और सर्वहारा वर्ग जीवन भर कड़ी मेहनत तथा रात-दिन कोल्हू के बैल की तरह चूसता रहता है। दो वक़्त भरपेट भोजन नहीं कर पाता अतः सारी मुसीबतों की जड़ वैमनस्य है। गोदान में शोषण करने वालों की भीड़ जमा है जमींदार किसानों का शोषण करता है महाजन ऋण लेने वालों का तथा उद्योगपति मिल मालिक मिलकर काम करने वाले मजदूरों का। गोदान में राय साहब किसानों से बेगार लेते हैं लगान वसूलते हैं रियायत नहीं करते समय पर लगान चुकाने वाले को बेदखली की धमकी देते हैं इतना ही नहीं अपने को स्वरूप करने सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने स्वयं को भारतीय संस्कृति का पुजारी एवं धार्मिक वृत्ति का व्यक्ति दिखाने के लिए रामलीला का आयोजन करते हैं। पर उसके लिए जो धनराशि चाहिए वह किसानों से वसूल करते हैं। प्रति हल चंदा देने की बात कहते हैं गांव में साहूकार एक नहीं अनेक है होरी के गांव में जिन गुरु सिंह पटवारी है नौकेराम का कारिंदा है दुलारी सब भाई भी हैं यहां तक कि धर्म आचार्य पंडित दातादीन भी ब्याज पर ऋण देता है यह सब ऊंची ब्याज दर पर ऋण देते हैं समय पर कागज नहीं लिखाते

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

नतीजा यह होता है कि मूल से तिगुना वसूल करते हैं। ऋण देते समय किसी ना किसी बहाने पूरी रकम भी नहीं देते 30 का कागज लिखवाते हैं पर ऋण लेने वाले के हाथ ₹25 ही बढ़ाते हैं। ऋण का भुगतान करने पर या लगान की पूरी रकम चुकाने पर कभी-कभी रसीद भी नहीं देते। ऋण लेने वाले की अशिक्षा भोलेपन तथा विश्वास करने की प्रवृत्ति का लाभ उठाकर चुकाई गई रकम को दुबारा वसूल करने का प्रयास करते हैं। नोखेराम , होरी के साथ यही करता है पर गोबर की वजह से उसकी चाल नहीं चल पाती। निष्कर्ष :- समग्रतः कहा जा सकता है कि गोदान कृषक जीवन का महाकाव्य है। यह उपन्यास शहरी जीवन से अधिक ग्रामीण जीवन को समाहित करता है जिसके कारण इस उपन्यास में कृषक की समस्याओं को अधिक मजबूती से प्रकट किया गया है। गोदान समस्यामूलक उपन्यास है। इस उपन्यास में अनेक समस्याओं को उजागर किया गया है। शहर के लोग जो अभिजात्य वर्ग कहलाते है।वह भी विभिन्न प्रकार की समस्या से ग्रसित है। कृषक वर्ग का चौतरफा शोषण किया जा रहा था उस समस्या को बारीकी से प्रेमचंद ने पकड़ा और प्रस्तुत किया साथ ही उससे मुक्ति का मार्ग भी दिया।[15]

निष्कर्ष

पंचवटी 1. चारु चन्द्र की .... झोंकों से। शब्दार्थ- चारु = सुन्दर । अवनि = धरती। अम्बरतले = आकाश। पुलक = आनन्दमय रोमांचित । तृण = घास । झीम = झूमना । सन्दर्भ- प्रस्तुत पद 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित खण्डकाव्य 'पंचवटी' से लिया गया है। प्रसंग- यहाँ कवि ने पंचवटी के प्राकृतिक सौन्दर्य का सजीव चित्रण किया है। व्याख्या- गुप्त जी कहते हैं कि सुन्दर चन्द्रमा की किरणें जल और थल में फैली हुई हैं। पृथ्वी और आकाश में स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है। हरी-हरी घास की नोकें ऐसी लगती हैं मानो वे पृथ्वी के सुख से रोमांचित हो रही हैं। वहाँ के सभी वृक्ष मन्दमन्द वायु के झोंकों से झूमते प्रतीत होते हैं। काव्यगत सौन्दर्य भाषा- खड़ीबोली । चाँदनी रात का बड़ा सुन्दर शब्द-चित्र प्रस्तुत किया गया है। अलंकार- अनुप्रास, उत्प्रेक्षा एवं मानवीकरण । रस- श्रृंगार । गुण- माधुर्य । 2. पंचवटी की छाया .... दृष्टिगत होता है। शब्दार्थ- पर्णकुटीर = पत्तों की कुटिया। सम्मुख = सामने । स्वच्छ = साफ, निर्मल । शिला = पत्थर । निर्भीकमना = निर्भय मनवाला। धनुर्धर = धनुष धारण करनेवाला। भुवन-भर = सम्पूर्ण संसार। भोगी = भोग करनेवाला, राजा। कुसुमायुध = कामदेव। सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' शीर्षक कविता से उद्धृत है। प्रसंग- इसमें प्रहरी के रूप में लक्ष्मण को सुन्दर चित्रण किया गया है। व्याख्या- कवि कहता है कि पंचवटी की घनी छाया में एक सुन्दर पत्तों की कुटिया बनी हुई है। उस कुटिया के सामने एक स्वच्छ विशाल पत्थर पड़ा हुआ है और उस पत्थर के ऊपर धैर्यशाली, निर्भय मनवाला वीर पुरुष बैठा हुआ है। सारा संसार सो रहा है परन्तु यह धनुषधारी इस समय भी जाग रहा है। यह वीर ऐसा दिखायी पड़ता है जैसे भोग करनेवाला कामदेव यहाँ योगी बनकर आ बैठा हो । काव्यगत सौन्दर्य भाषा- खड़ीबोली । रस- शान्त । अलंकार- अनुप्रास अलंकार की छटा है, उपमा अलंकार की सुन्दर योजना है। प्रसाद गुण युक्त सरल साहित्यिक खड़ीबोली भाषा है। गुण- प्रसाद। 3. किस व्रत में .... जीवन है। शब्दार्थ-व्रती = व्रत धारण करनेवाला । विपिन = वन । विराग = वैराग्य, विरक्ति। प्रहरी = पहरेदार । कुटीर = कुटिया। रस = लगा हुआ। राज भोग्य = राज भोगने योग्य। सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी काव्य' में संकलित एवं मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से अवतरित है। प्रसंग- यहाँ राम और सीता की कुटी पर पहरा देते हुए लक्ष्मण की विशेषताओं का चित्रण किया गया है। व्याख्या- इस वीर पुरुष ने यह कौन-सा व्रत धारण किया है, जिसके कारण इस प्रकार नींद का त्याग कर दिया है। यह तो राज्य के सुखों को भोगने योग्य है परन्तु किस कारण से यह वन में वैराग्य ग्रहण किये हुए बैठा है। पता नहीं इस कुटिया में ऐसा कौन-सा अमूल्य धन रखा हुआ है, जिसकी रक्षा में तन-मन और जीवन लगाते हुए लक्ष्मण प्रहरी बना हुआ है। काव्यगत सौन्दर्य यहाँ एक निर्भीक और कर्तव्यनिष्ठ प्रहरी के रूप में लक्ष्मण का सजीव चित्रण हुआ है। भाषा- सरस व शुद्ध खड़ीबोली। शैली- वर्णनात्मक। अलंकार- अनुप्रास। गुण-ओज रस- अद्भुत । 4. मर्त्यलोक-मालिन्य .... माया ठहरी। शब्दार्थ- मर्त्यलोक-मालिन्य = संसार के पाप । सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उद्धृत हैं। प्रसंग- कवि ने उस अनुपम धन की महानता का वर्णन किया है, जिसकी रक्षा में वीर, व्रती लक्ष्मण एकाग्र मन से संलग्न हैं। व्याख्या- वास्तव में इस कुटी के अन्दर ऐसा अनुपम धन है, जिसकी रक्षा एक वीर पुरुष ही कर सकता है। तीनों लोकों को साक्षात् लक्ष्मी सीताजी इस कुटी के अन्दर विद्यमान हैं। वे अपने पति राम के साथ इस कुटी में रह रही हैं। मनुष्य लोक की बुराइयों को दूर करने के लिए वे अपने पति राम के साथ आयी हैं; अतः इस कुटी में तीनों लोकों की लक्ष्मी स्वरूप सीताजी विराजमान हैं। वे वीरों के वंश की प्रतिष्ठा हैं। रघुवंश वीरों की वंश है। उनकी रक्षा से ही रघुवंश की प्रतिष्ठा हो सकती है। यदि सीताजी की प्रतिष्ठा में कोई आँच आती है तो रघुकुल की प्रतिष्ठा में धब्बा लगता है। इसीलिए लक्ष्मण जैसे प्रहरी को यहाँ नियुक्त किया गया है।[11,12] वीर लक्ष्मण इस कुटी में उपस्थित सीताजी की रक्षा में अपना तन, मन और जीवन समर्पित किये हुए हैं। यह वन निर्जन है। रात्रि काफी शेष है। यहाँ पर राक्षस लोग चारों ओर घूम रहे हैं। वे किसी माया के जाल में फंसाकर विपत्ति खड़ी कर सकते हैं। अतः रात्रि के समय निर्जन प्रदेश में राक्षसों की माया से बचने के लिए लक्ष्मण जैसा वीर ही उपयुक्त पहरेदार है। काव्यगत सौन्दर्य यहाँ कवि ने वीर लक्ष्मण को उपयुक्त पहरेदार के रूप में चित्रित किया है। सीता 'वीर वंश की लाज' हैं। भाषा- साहित्यिक खड़ीबोली। शैली- चित्रात्मक एवं गीत । रस- शान्त । छन्द- मात्रिक। अलंकार- अनुप्रास, रूपक। गुण-माधुर्य । 5. क्या ही स्वच्छ... और चुपचाप। शब्दार्थ- निस्तब्ध = सन्नाटे से भरी। स्वच्छन्द= स्वतन्त्र । सुमन्द = मन्द-मन्द। गन्धवह = हवा, वायु। निरानन्द = आनन्दरहित । नियति-नटी

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

= नियतिरूपी । नटी = नर्तकी । नियति = भवितव्यता, भाग्य । कार्य-कलाप = क्रिया-कलाप, काम। सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' पाठ से उधृत है। प्रसंग- पंचवटी में दूर तक फैली चाँदनी का वर्णन करते हुए कवि कहता है व्याख्या- पंचवटी में जो दूर-दूर तक चाँदनी फैली हुई है, वह बहुत ही साफ दिखायी दे रही है और रात सन्नाटे से भरी है। कोई शब्द नहीं हो रहा है। वायु स्वच्छन्द गति से, अपनी स्वतन्त्र चाल से मन्द-मन्द बह रही है। इस समय उत्तर-पश्चिम आदि सभी दिशाओं में आनन्द-ही-आनन्द व्याप्त है। कोई भी दिशा आनन्द-शून्य नहीं है। ऐसे समय में भी नियति नामक शक्ति-विशेष के समस्त कार्य सम्पन्न हो रहे हैं। कहीं कोई रुकावट नहीं। नियति-नटी अपने क्रिया-कलापों को बहुत ही शान्ति से सम्पन्न कर रही है। वह एकान्त भाव से अर्थात् अकेले-अकेले और चुपचाप अपने कर्तव्यों का निर्वाह किये जा रही है। काव्यगत सौन्दर्य नियति के क्रिया-कलाप निरन्तर चलते रहते हैं। उनमें दिन या रात का कोई व्यवधान नहीं आता। भाषा- साहित्यिक खड़ीबोली। छन्द- मात्रिक। अलंकार- अनुप्रास, रूपक। रस- शान्त शैली- भावात्मक। 6. है बिखेर देती.. झलकाता है। सन्दर्भ- प्रस्तुत अवतरण मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' नामक काव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी काव्य' में संगृहीत किया गया है। प्रसंग- वनवास के समय पंचवटी में निवास करते हुए लक्ष्मण एक पर्णकुटी में सीता की रक्षा करते हुए रात की प्राकृतिक शोभा का वर्णन करते हुए कहते हैं व्याख्या- यह पृथ्वी सबके सो जाने पर नित्यप्रति आकाश में नक्षत्ररूपी मोतियों को फैला देती है और सूर्य सदा ही प्रातः काल हो जाने पर उनको बटोरकर रख लेता है। वह सूर्य.भी.नक्षत्ररूपी मोतियों को संध्यारूपी सुन्दरी को देकर अपने लोक चला जाता है। अतः नक्षत्ररूपी मोतियों को धारण करके उस सन्ध्यारूपी सुन्दरी का शून्य-सा श्यामल रूप झिलमिल करता हुआ अति दीप्त हो जाता है। काव्यगत सौन्दर्य प्रकृति वर्णन में मानवीकरण किया गया है। अलंकार-अतिशयोक्ति अलंकार । भाषा-शुद्ध परिमार्जित खड़ीबोली। गुण-प्रसाद, शैली-वर्णनात्मक। छन्द-मात्रिक। 7. सरल तरल जिन तुहिन .... सदय भाव से सेती है। शब्दार्थ- तुहिन = ओस, पाला। सेती है = रक्षा करती है। अदय = निर्दय। सन्दर्भ- प्रस्तुत पद 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित खण्डकाव्य 'पंचवटी' से लिया गया है। प्रसंग- पंचवटी में लक्ष्मण शिला पर विराजमान हो प्रकृति के रूप और उनके व्यवहार के सम्बन्ध में सोच रहे हैं। वे कहते हैं व्याख्या- कभी तो प्रकृति पृथ्वी पर जिन ओस के कणों से हँसती और प्रसन्न होती-सी प्रतीत होती है उन्हीं ओस के कणों के माध्यम से वह हमारे अत्यन्त ही निकट और आत्मीय हो कष्टों से व्यथित होकर रुदन करती-सी प्रतीत होती है अर्थात् कभी ओस की बूंदें मोती-सी चमकदार प्रकृति की प्रसन्नता को व्यक्त करती हैं और कभी आँख के आँसुओं के रूप में हमारे दुःखों से दुःखित हो रोती हुई-सी प्रतीत होती हैं।[13,14] कभी तो यह इतनी निर्दय और निष्ठुर हो जाती हैं कि वह अनजाने में हमारे द्वारा की गयी भूलों के कारण हमें कठोर से कठोर दण्ड तक ने सकती हैं; जैसे-भूकम्प, अतिवृष्टि, बाढ़ आदि। कभी इतनी दयालु हो जाती हैं। कि बूढ़ों की भी बच्चों की भाँति दया-भाव से सेवा करती हैं। काव्यगत सौन्दर्य इस पद में प्रकृति के शिव और अशिव दोनों रूपों का वर्णन है। यहाँ पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया है जो छायावादी कविता का प्रभाव है। 'हँती हरित होती है', 'अति आत्मीयता से सेती है' अनुप्रास अलंकार है। छन्द- मात्रिक।भाषा- साहित्यिक खड़ीबोली। रस- श्रृंगार । गुण- माधुर्य। 8. तेरह वर्ष .... किस धन की? शब्दार्थ- तात = पिताजी। आर्त = दुःख से। इन जन को = मुझे। सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' से उद्धृत है। प्रसंग- कवि ने वनवास के 13 वर्ष व्यतीत हो जाने पर लक्ष्मण के घर लौटने की प्रसन्नता का वर्णन किया है। व्याख्या- वनवास के समय यद्यपि तेरह वर्ष व्यतीत हो चुके हैं परन्तु सम्पूर्ण बात कल की बात की तरह हृदय पटल पर अंकित है, जबकि पिताजी हमको वन में आते देख दुःख से अचेत हो गये थे। वनवास की अवधि की समाप्ति निकट है परन्तु मुझे इसँ वनवास से बढ़कर और किस धन की प्राप्ति हो सकती है। काव्यगत सौन्दर्य भाषा- साहित्यिक खड़ीबोली । रस- शान्त । गुण- प्रसाद । छन्द- मात्रिक। अलंकार- उत्प्रेक्षा, रूपक। 9. और आर्य को?.. यह नरलोक? शब्दार्थ- प्रजार्थ = प्रजा के लिए। लोकोपकार = संसार की भलाई। सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' से उद्धृत है। प्रसंग- कवि कहता है कि लक्ष्मण कल्पना कर रहे हैं कि जब रामचन्द्र को राज्य मिल जायेगा तो वे अपने कर्तव्य में इतने व्यस्त हो जायेंगे कि हमें भूल जायेंगे। राम के जन कल्याण में लगे होने के कारण इसको हम बुरा नहीं मानेंगे। व्याख्या- आर्य राम को इससे अधिक सुख और क्या हो सकता है? रामचन्द्र जी सिंहासन पर बैठकर प्रजा के सुख के लिए राज्य करेंगे। उस कार्य में व्यस्त होकर हमको भी भुला देने को विवश हो जायेंगे। परन्तु संसार की भलाई के विचार से हमको इसमें तनिक भी दुःख नहीं होगा, किन्तु क्या यह मनुष्य समाज राजा का आश्रय न लेकर अपनी भलाई स्वयं नहीं कर सकता। काव्यगत सौन्दर्य भाषा- खड़ीबोली है। रस- शान्त। गुण- माधुर्य । छन्द- मात्रिक। इसमें यह भाव दर्शाया गया है कि क्या मनुष्य बिना किसी के सहारे अपनी भलाई स्वयं नहीं कर सकता? अलंकार- उत्प्रेक्षा। प्रश्न 2. मैथिलीशरण गुप्त की जीवनी एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए। अथवा मैथिलीशरण गुप्त की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए। अथवा मैथिलीशरण गुप्त के साहित्य एवं जीवन-परिचय पर प्रकाश डालिए। मैथिलीशरण गुप्त (स्मरणीय तथ्य) जन्म- सन् 1886 ई०, चिरगाँव जिला झाँसी, (उ० प्र०)। मृत्यु- सन् 1964 ई०। रचनाएँ- मौलिक काव्य-'भारत-भारती', 'जयद्रथ-वध', 'पंचवटी', 'साकेत', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'सिद्धराज' आदि। अनूदित-'मेघनाद-वध', 'वीरांगना', 'विरहिणी-ब्रजांगना', 'प्लासी का युद्ध', 'रुबाइयाँ', 'उमर-खैयाम'। काव्यगत विशेषताएँ वर्य-विषय- 'राष्ट्रप्रेम', 'आर्य संस्कृति से प्रेम', 'प्रकृति-प्रेम','मानव हृदय चित्र', 'नारी महत्त्व'। भाषा- शुद्ध तथा परिष्कृत खड़ीबोली। शैली- प्रबन्धात्मक, उपदेशात्मक, गीतिनाट्य तथा भावात्मक। रस तथा अलंकार- प्रायः सभी। विप्रलम्भ श्रृंगार में विशेष सफलता मिली है। जीवन-परिचय- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

का जन्म चिरगाँव जिला झाँसी में सन् 1886 ई० में हुआ था। गुप्तजी के पिता का नाम सेठ रामचरण जी था जो अत्यन्त ही सहृदय और काव्यानुरागी व्यक्ति थे। पिता के संस्कार पुत्र को पूर्णतः प्राप्त थे। इनकी शिक्षा-दीक्षा प्रायः घर पर ही हुई थी । हिन्दी के अतिरिक्त इन्होंने संस्कृत, बंगला, मराठी आदि भाषाओं का अध्ययन किया था। आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी जी के सम्पर्क में आने से इनकी रचनाएँ सरस्वती में प्रकाशित होने लगीं। द्विवेदीजी की प्रेरणा से ही इनके काव्य में गम्भीरता एवं उत्कृष्टता का विकास हुआ। इनके काव्य में राष्ट्रीयता की छाप है। गाँधी दर्शन से आप विशेष प्रभावित हैं। इन्होंने असहयोग आन्दोलन में जेल यात्रा भी की है। आगरा विश्वविद्यालय ने इनकी हिन्दी सेवा पर सन् 1948 ई० में डी० लिट्० की सम्मानित उपाधि से विभूषित किया। 'साकेत' नामक प्रबन्ध काव्य पर इनको मंगलाप्रसाद पारितोषिक भी मिल चुका है। आप स्वतन्त्र भारत के राज्यसभा में सर्वप्रथम सदस्य मनोनीत किये गये थे। आपकी मृत्यु सन् 1964 ई० में हो गयी। रचनाएँ– गुप्तजी की रचनाएँ दो प्रकार की हैं- (1) मौलिक एवं (2) अनूदित । मौलिक- जयद्रथ-वध, भारत-भारती, पंचवटी, नहुष आदि। अनूदित रचनाएँ- मेघनाद वध, वीरांगना, स्वप्नवासवदत्ता आदि।'साकेत' आधुनिक युग का प्रसिद्ध महाकाव्य है। इसमें रामकथा को एक नये परिवेश में चित्रित कर उपेक्षित उर्मिला के चरित्र को उभारा गया है। यशोधरा में बुद्ध के चरित्र का चित्रण हुआ है। यह एक चम्पू काव्य है जिसमें गद्य और पद्य दोनों में रचना की गयी है। भारत-भारती गुप्त जी की सर्वप्रथम खड़ीबोली की राष्ट्रीय रचना है जिसमें देश की अधोगति को बड़ा ही मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। काव्यगत विशेषताएँ (क) भाव-पक्ष- गुप्तजी की कविता के वर्ण्य-विषय मुख्यतः भक्ति, राष्ट्र-प्रेम, भारतीय संस्कृति और समाजसुधार हैं। इनकी धार्मिकता में संकीर्णता का आरोप नहीं किया जा सकता है। ये भारतीय संस्कृति के सच्चे पुजारी हैं। गुप्तजी लोक सेवा को सर्वोपरि मानते हैं। इनके हृदय में नारी जाति के प्रति अपार आदर और सहानुभूति है। राष्ट्रप्रेम तो गुप्तजी के शब्द-शब्द में भरा है। इनकी राष्ट्रीयता पर गाँधीवाद की पूरी छाप है। इनकी रचनाओं में समाज सुधारवादी दृष्टिकोण भी दिखलाई पड़ता है। गुप्तजी के प्रकृति-चित्रण में सरसता एवं सजीवता है। मनोभावों के चित्रण में गुप्तजी को विशेष दक्षता प्राप्त है। संवादों की अभिव्यक्ति अत्यन्त ही सरल तर्क-व्यंग्य से मुक्त है। (ख) कला-पक्ष- भाषा और शैली- गुप्तजी की भाषा शुद्ध परिष्कृत खड़ीबोली है जिसका विकास धीरे-धीरे हुआ है। इनकी प्रारम्भिक काव्य रचनाओं में गद्य की भाँति शुष्कता है, किन्तु बाद की रचनाओं में सरसता और मधुरता अपने आप आ गयी है। इनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। शब्द-चयन में भी ये काफी कुशल हैं। उसमें मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से चार चाँद लग गये हैं। भाषा में प्रसाद गुण की प्रधानता है। कहीं-कहीं तुक मिलाने के प्रयास में इन्हें शब्दों को विकृत भी करना पड़ा है जो कभी-कभी खटक जाता है। काव्य-रचना की दृष्टि से गुप्तजी की शैली चार प्रकार की है – भावात्मक शैली- झंकार तथा अन्य गीति काव्य। उपदेशात्मक शैली- भारत-भारती, गुरुकुल आदि। गीति-नाट्य शैली- यशोधरा, सिद्धराज, नहुष आदि। प्रबन्धात्मक शैली- साकेत, पंचवटी, जयद्रथ-वध आदि। रस-छन्द-अलंकार- गुप्तजी के काव्य में वीर, रौद्र, हास्य आदि सभी रसों का सुन्दर परिपाक हुआ है। गुप्तजी ने नये और पुराने दोनों प्रकार के छन्द अपनाये हैं। हरिगीतिका गुप्तजी का अत्यन्त ही प्रिय छन्द है। गुप्तजी की कविता में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विषयोक्ति, संदेह, यमक, श्लेष, अनुप्रास आदि अलंकारों की प्रधानता है। विशेषण-विपर्यय और मानवीकरण आदि नये ढंग के अलंकार भी इनकी रचनाओं में छायावाद प्रभाव के कारण आ गये हैं। साहित्य में स्थान- गुप्तजी आधुनिक हिन्दी काव्य-जगत् के अनुपम रत्न हैं। ये सही अर्थों में राष्ट्रकवि थे। इन्होंने अपनी प्रेरणादायक और उद्बोधक कविताओं से राष्ट्रीय जीवन में चेतना का संचार किया है। प्रश्न 3. 'पंचवटी' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।[14,15] 'पंचवटी' कविता राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' खण्डकाव्य से उधृत है। इसमें पंचवटी के प्राकृतिक सौन्दर्य का जीवन्त वर्णन है। प्रकृति-वर्णन के अतिरिक्त श्रीराम के विशाल व्यक्तित्व का भी इसमें सजीव चित्रण है। कविता का सारांश निम्न प्रकार है – सारांश- चन्द्रमा की स्वच्छ चाँदनी पृथ्वी तल पर तथा आकाश में फैली हुई है। पृथ्वी पर हरित-दूब उगी हुई है। मन्द पवन के झोंकों से वृक्ष मानो मस्त होकर झूम रहे हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण पंचवटी पर श्रीराम की कुटी बनी हुई है। इस कुटी के सामने श्वेत शिला पर कामदेव की भाँति धनुष धारण कर लक्ष्मण योगी रूप में कुटी की रक्षा में सम्पूर्ण राज्य-सुखों को त्याग कर लीन हैं। आज तीनों लोकों की रानी सीता ने इस कुटी को अपना लिया है। रानी सीता रघुवंश की लाज हैं। इसलिए लक्ष्मण इस कुटी का प्रहरी वीर-वेश धारण किये हुए हैं। प्रकृति-सुन्दरी यहाँ अपना नाटक पूरा करती है। इसलिए वह प्रतिदिन शाम को पृथ्वी पर सुन्दर मोती (ओस-कण) बिखेर देती है और सूर्य सबेरा होते ही उन्हें समेट लेता है। इस प्रकार वन में राम, लक्ष्मण और सीता को रहते हुए तेरह वर्ष बीत चुके। श्रीराम प्रजा के हित के लिए अतिशीघ्र राज्य ग्रहण करेंगे और लोक का उपकार करेंगे। राज्यभार ग्रहण कर वे अति व्यस्त हो जायेंगे। व्यस्तता में वे हमें भी भूल जायेंगे परन्तु लोकोपकार की भावना में ऐसा होने पर हमें कोई दु:ख नहीं होगा। इसी समय लक्षण के मन में विचार उठता है कि क्या संसार के लोग स्वयं अपना उपकार नहीं कर सकते? लघु उत्तरीय प्रश्न प्रश्न 1. 'पंचवटी' की प्रकृति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। उत्तर- गुप्तजी की कविताओं में प्रकृति का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। उन्होंने प्रकृति के मोहक चित्र अपने काव्य में प्रस्तुत किये हैं। पंचवटी' में तो प्रकृति-चित्रण साकार हो उठा है। वे चाँदनी रात का वर्णन करते हुए कहते हैं कि "चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में स्वच्छ चाँदी बिछी हुई हैं, अवनि और अम्बर तल में।" पृथ्वी पर निकली हरी घास की नोकें हिल रही हैं, मानो पृथ्वी उन्हीं के द्वारा अपनी प्रसन्नता को प्रकट कर रही है। रात्रि के समय चारों ओर चाँदनी छिटकी हुई है और वातावरण शान्त है। प्रात:काल सूर्य के निकलने पर ओस की बूंदें गायब हो जाती हैं। सन्ध्या के समय तारे निकल आते हैं, जिससे उसको सौन्दर्य और अधिक बढ़ जाता है। प्रश्न 2. 'प्रहरी बना हुआ वह' (लक्ष्मण) कुटीर के किस धन की रक्षा कर रहा है? उत्तर- लक्ष्मण जी प्रहरी बनकर सीतारूपी महान् धन की रक्षा कर रहे हैं। प्रश्न 3. लक्ष्मण संसार के मनुष्यों से क्या करने की आशा रखते

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

हैं? उत्तर- लक्ष्मण जी अपेक्षा करते हैं कि संसार के सभी व्यक्ति लोकोपकार में लगे रहें, अपने हित का चिन्तन करें और अपने हित के लिए दूसरों पर निर्भर न रहें। प्रश्न 4. पंचवटी' कविता में निहित मूल भाव से सम्बन्धित चार वाक्य लिखिए। उत्तर- चन्द्रमा की स्वच्छ चाँदनी पृथ्वी तल और आकाश में छायी हुई है। पृथ्वी पर हरी-भरी दूब उगी हुई है। मन्द पवन के झोंकों से पेड़ मानो मस्त होकर झूम रहे हैं। इस प्रकार प्राकृतिक सौन्दर्य से भरी हुई पंचवटी में श्रीराम की कुटी बनी हुई है। कवि के मन में प्रश्न उठता है कि इस श्वेत शिला पर कामदेव की भाँति सुन्दर यह कौन धनुर्धारी योगी बैठा जाग रहा है? यह योगी सम्पूर्ण राज्य-सुखों को त्यागकर इस कुटी में कौन-से धन की रक्षा कर रहा है? प्रश्न 5. मैथिलीशरण गुप्त की भाषा-शैली लिखिए। उत्तर- गुप्तजी ने शुद्ध, साहित्यिक एवं परिमार्जित खड़ीबोली में रचनाएँ की हैं। इनकी भाषा सुगठित तथा ओज एवं प्रसाद गुण से युक्त है। इन्होंने अपने काव्य में संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू एवं प्रचलित विदेशी शब्दों के भी प्रयोग किये हैं। इनके द्वारा प्रयुक्त शैलियाँ हैं-प्रबन्धात्मक शैली, उपदेशात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, गीति शैली तथा नाट्य शैली। वस्तुतः आधुनिक युग में प्रचलित अधिकांश शैलियों को गुप्तजी ने अपनाया है। प्रश्न 6. सन्ध्या को सूर्य की विरामदायिनी क्यों कहा गया है? उत्तर- सूर्य दिन भर आकाश मार्ग में चलता है। जब सन्ध्या होती है तब सूर्य की यात्रा रुकती है। कवि कल्पना के अनुसार सूर्य विश्राम करता है। इस कारण सन्ध्या को सूर्य की विरामदायिनी कहा गया है। सूर्य के अतिरिक्त सन्ध्या पक्षियों, किसान आदि के लिए भी विरामदायिनी है।

बालेन्दु शेखर तिवारी

संक्षिप्त जीवनी

हिन्दी के विश्रुत व्यंग्यकर्मी, व्यंग्य समीक्षक, सर्वप्रिय प्राध्यापक प्रोफ़ेसर (डॉ.) बालेन्दु शेखर तिवारी का जन्म 29 अक्टूबर 1948 को सीवान, बिहार में हुआ था। मात्र 5 वर्ष की अल्प आयु में आपके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। आपके पिता स्व. डॉ. सिद्धिनाथ तिवारी बिहार नेशनल कॉलेज, पटना, बिहार में हिन्दी के प्राध्यापक थे। तत्पश्चात पितामह स्व. श्री रामदास तिवारी (सेवानिवृत्त सहायक पोस्ट मास्टर जनरल, भारत सरकार) और माता जी स्व. लीलावती देवी की छत्रछाया में आपकी शिक्षा–दीक्षा पटना विश्वविद्यालय से संपन्न हुई। 19 मई सन 1970 को आप अपनी सहधर्मिणी स्व. श्रीमती विद्या तिवारी से परिणय सूत्र में बंधे। आपने सन 1975 में पटना विश्वविद्यालय, बिहार से 'हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य' विषय पर पीएच. डी. की शोध उपाधि हासिल की और सन 1983 में राँची विश्वविद्यालय से आपने 'हिन्दी व्यंग्य लेखन का शैलीवैज्ञानिक विश्लेषण' विषय पर डी. लिट. की सर्वोच्चतम शोध उपाधि प्राप्त की। सन 1975 में ही आपकी नियुक्ति राँची विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक पद पर हुई। आप सन 2010 में राँची विश्वविद्यालय से प्रोफ़ेसर पद से सेवानिवृत्त हुए। लगभग 36 वर्षों के विश्वविद्यालीय कार्यकाल में आपने 56 पीएच.डी और 14 डी.लिट. उपाधियों के लिए शोधार्थियों का निर्देशन किया। लगभग पाँच दशकों की लंबी अवधि में आपने व्यंग्य लेखन की सभी विधाओं – व्यंग्य, लघु व्यंग्य, कविता, नाटक, व्यंग्यालोचन, पत्रकारिता में अमूल्य योगदान दिया। इस क्षेत्र में 30 से अधिक पुस्तकों और व्यंग्येतर अध्ययन-अनुसंधान से जुड़ी 30 से अधिक पुस्तकों के रचयिता प्रोफ़ेसर तिवारी को अनेक शासकीय-साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया। उनके व्यंग्यकर्म पर कई विश्वविद्यालयों में शोध कार्य सम्पन्न हो चुके हैं। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक आपने साहित्य और भाषा के विषयों पर अनेक व्याख्यान दिए और देश भर के विश्वविद्यालयों में प्रस्तुत 170 से अधिक डी.लिट. / पी.एच.डी. / एम.फिल. के शोध-प्रबन्धों का मूल्यांकन किया। भारत की सामासिक साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए आपने महती भूमिका निभाई। आपने दक्षिण भारत के प्रमुख समाज सुधारक एवं दार्शनिक गुरू बसवेश्वर द्वारा कन्नड़ भाषा में लिखित 'वचन साहित्य' का भोजपुरी भाषा में अनुवाद किया, जिसे बसव समिति, बेंगलूरू ने 'वचन' शीर्षक से वर्ष 2016 में प्रकाशित किया। प्रतिदिन नियमित रूप से 16 घंटे काम करने वाले प्रोफ़ेसर तिवारी का 68 वर्ष की आयु में 19 फरवरी 2017 को राँची (झारखंड) में निधन हो गया। वे अपने पीछे अपनी चार संतानों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री अभीक अवतंस पटना में असिस्टेंट कमिश्नर, सेल्स टैक्स, बिहार सरकार के पद पर कार्यरत हैं, उनकी ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती डॉ संपदा पाण्डेय इंटर कॉलेज, पटना, में हिन्दी साहित्य की व्याख्याता हैं, कनिष्ठ पुत्री श्रीमती अंगदा पाण्डेय इंटर कॉलेज, बेंगलुरू में जैव विज्ञान की व्याख्याता हैं, छोटे पुत्र अभिषेक अवतंस नीदरलैंड (यूरोप) के लायडन विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषाविज्ञान और साहित्य के प्राध्यापक हैं।[15]

संदर्भ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, सम्पादक-डा॰ नगेन्द्र, संस्करण १९८५, प्रकाशक- नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३ दरियागंज, नयी दिल्ली-११००२, पृष्ठ- ७९
2. Dasgupta, Sashibhusan (1995). Obscure Religious Cults, Firma K.L.M., Calcutta, ISBN 81-7102-020-8, pp.203ff, 204

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205489 |

3. ↑ Shastri Haraprasad (ed.) (1916, 3rd edition 2006). Hajar Bacharer Purano Bangala Bhasay Bauddhagan O Doha (in Bengali), Kolkata: Vangiya Sahitya Parishad, pp.xxxv-vi
4. रमेश, गौतम; प्रभा; रचना, सिंह (2006). काव्य सुधा. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. आईऍसबीऍन 81-8143-602-4. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2021.
5. हजारीप्रसाद, द्विवेदी (2009). हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास. राजकमल प्रकाशन. पपृ° 31~. आईऍसबीऍन 978-81-267-0035-6. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2021.
6. शर्मा, राजमणि (2009). अपभ्रंश भाषा और साहित्य. भारतीय ज्ञानपीठ. आईऍसबीऍन 978-81-263-1711-0. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2021.
7. रामछबीला, त्रिपाठी (2017). हिंदी और भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन. Vāṇī Prakāśana. आईऍसबीऍन 978-93-86799-14-2. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2021.
8. गौतम, मूलचंद (2009). भारतीय साहित्य. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन. आईऍसबीऍन 978-81-8361-352-1. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2021.
9. सिद्ध चिकित्सा (इण्डिया वाटर पोर्टल)
10. सिद्ध चिकित्सा पद्धति (विकासपीडिया)
11. सिद्ध चिकित्सा पद्धति : पर्यावरण हितैषी और रोगी हितैषी
12. Siddha System Of Medicine Medicine
13. Central Council for Research in Ayurveda and Siddha
14. National Institute of Siddha
15. More About Siddha Medicine

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.423

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

Scan to save the contact details